सर्वाम्नायमयेन येन वहताऽन्तःपुण्डरीकेक्षणं
हृत्पद्मानि विकासितानि सुपथा व्यक्तीकृता हर्षिताः।
हंसालोचनरोधिनः प्रमथिता वादाः प्रमादावहा
गोभिः कर्म सतां प्रवर्तितमसौ श्रीवल्भार्कोऽवतात्।।

श्री भारतमार्तण्डमहाभागाः।

निःसाधन समोद्धार करणाय समागताः।
श्रीमन्तो वल्लभाचार्याः कृपयन्तु सदामयि।।

प्रति १,००,००० {न्योछावर ८/- रुपया}

## ❁ निवेदन ❁

पुष्टिमार्गीय विचारों के प्रचारार्थ पूज्यपाद आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी {श्री राकेशजी} महाराज की आज्ञा से टिप्पणी के अन्त में श्रीमहाप्रभु जी के उपदेश पृष्ठ ३१ व ३३ पर प्रकाशित किये हैं। आशा है वैष्णव बन्धु इन उपदेशों से लाभ लेकर हमारे प्रयास को सफल बनायेंगे।

जिनको तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो उनको यहां से प्रकाशित होने वाले श्रीनाथ पंचांग को मंगवा लेना चाहिये अथवा तत्तत्प्रान्तों की तिथ्यादिक की विशेष जानकारी अपेक्षित हो तो तत्तत्प्रान्तों से प्रकाशित होने वाले दृश्य गणितानुसारी पंचांग को मंगवा लेना चाहिये।

अध्यक्ष

विद्या विभाग मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

नोट : पुष्टिमार्ग सम्बन्धी विशेष जानकारी वेबसाइट www.nathdwara.in/ www.nathdwaratemple.org के द्वारा भी आप प्राप्त कर सकते है।

| वल्लभाब्द ५३७ | | | **चैत्र शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | शनि | २१ | मार्च, सन् २०१५ संवत्सरोत्सवः। इष्टिः। |
| २ | रवि | २२ | गणगौरी। तीज का क्षय होयवे सूं आज |
| ४ | सोम | २३ | |
| ५ | मंगल | २४ | |
| ६ | बुध | २५ | श्री गुसांईजी के छट्ठेलालजी श्री यदुनाथजी को उत्सव। (१६१५) |
| ७ | गुरू | २६ | |
| ८ | शुक्र | २७ | |
| ९ | शनि | २८ | रामनवमी व्रतम्। |
| १० | रवि | २९ | रामनवमी व्रत की पारणा। |
| ११ | सोम | ३० | श्री वल्लभाचार्य चरण के उत्सव की बधाई। |
| ११ | मंगल | ३१ | कामदा एकादशी व्रतम्। |
| १२ | बुध | १ | अप्रेल |
| १३ | गुरू | २ | |
| १४ | शुक्र | ३ | |
| १५ | शनि | ४ | ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रगहण निर्णय पृ. २८-२९ पर अंकित है। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | रवि | ५ | इष्टिः। |
| २ | सोम | ६ | |
| ३ | मंगल | ७ | |
| ४ | बुध | ८ | |
| ५ | गुरू | ९ | |
| ६ | शुक्र | १० | |
| ७ | शनि | ११ | श्री विट्ठलनाथजी को पाटोत्सवः। |
| ८ | रवि | १२ | |
| ९ | सोम | १३ | |
| १० | मंगल | १४ | पांच स्वरूप को उत्सव नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज कृत। मेष संक्रान्ति। सतुआ उत्थापन में पुण्यकाल आज प्रातः ९ बजके ४८ मिनिट सूं ले के सायं ५ बजके ४८ मिनट पर्यन्त। तामे भी संक्रान्ति के पास के दो घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। श्री कूं भोग धरे पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रान्ति आज दोपहर १ बजके ४८ मिनिट पे बैठी है तासूं पुण्य काल आज मान्यो जायगो। |
| ११ | बुध | १५ | वरूथिनी एकादशी व्रतम्। श्री वल्लभाचार्यजी (श्री महाप्रभुजी) को उत्सव। (१५३५) श्री वल्लभाब्द ५३८ को प्रारम्भ। |
| १२ | गुरू | १६ | |
| १३ | शुक्र | १७ | |
| ३० | शनि | १८ | |

| वल्लभाब्द ५३८ | | | **वैशाख शुक्लपक्षः** विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | रवि | १९ | इष्टिः। |
| २ | सोम | २० | |
| ३ | मंगल | २१ | अक्षय तृतीया चन्दन यात्रा त्रेतायुगादि जलकुम्भ दानम्। |
| ४ | बुध | २२ | |
| ५ | गुरू | २३ | |
| ६ | शुक्र | २४ | |
| ७ | शनि | २५ | तिलकायित श्री लालगिरधारीजी महाराज को उत्सव (१९९०) |
| ८ | रवि | २६ | |
| ९ | सोम | २७ | |
| १० | मंगल | २८ | |
| ११ | बुध | २९ | मोहिनी एकादशी व्रतम् । |
| १२ | गुरू | ३० | |
| १३ | शुक्र | १ | मई |
| १३ | शनि | २ | |
| १४ | रवि | ३ | श्री नृसिंह जयन्ती व्रतम् । |
| १५ | सोम | ४ | इष्टिः। |

| वल्लभाब्द ५३८ | ज्येष्ठ (गु. वैशाख) कृष्णपक्षः | | विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | मंगल | ५ | |
| २ | बुध | ६ | चार स्वरूप को उत्सव ति. श्री दाऊजी महाराज कृत। |
| ३ | गुरू | ७ | |
| ४ | शुक्र | ८ | |
| ५ | शनि | ९ | |
| ६ | रवि | १० | |
| ८ | सोम | ११ | |
| ९ | मंगल | १२ | |
| १० | बुध | १३ | |
| ११ | गुरू | १४ | अपरा एकादशी व्रतम्। |
| १२ | शुक्र | १५ | |
| १३ | शनि | १६ | |
| १४ | रवि | १७ | |
| ३० | सोम | १८ | सोमवती अमावस ९ बजके ४५ मिनिट तक। इष्टिः। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | मंगल | १६ | |
| २ | बुध | २० | |
| ४ | गुरू | २१ | |
| ५ | शुक्र | २२ | श्री के नाव को मनोरथ। |
| ५ | शनि | २३ | |
| ६ | रवि | २४ | |
| ७ | सोम | २५ | आज सूं ले के शुद्ध आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६सोम पर्यन्त सूर्य कूं रोहिणी नक्षत्र है तासूं इन दिनन में श्री के अंग में चन्दन धरावनो प्रशस्त है। |
| ८ | मंगल | २६ | |
| ६ | बुध | २७ | |
| १० | गुरू | २८ | श्री गंगादशमी दशहरा श्री यमुनाजी को उत्सव माने हे। |
| ११ | शुक्र | २६ | निर्जला एकादशी व्रतम्। |
| १२ | शनि | ३० | |
| १३ | रवि | ३१ | तिलकायित श्री गिरधारीजी महाराज को उत्सव। (१६००) |
| १४ | सोम | १ | जून |
| १५ | मंगल | २ | स्नान को जल भरनो सांझ कूं जल को अधिवासन करनो। |

| वल्लभाब्द ५३८ | **शुद्ध आषाढ़ (गु. ज्येष्ठ) कृष्णपक्षः** | | विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | बुध | ३ | इष्टिः। ज्येष्ठाभिषेक (स्नानयात्रा)। |
| २ | गुरू | ४ | |
| ३ | शुक्र | ५ | |
| ४ | शनि | ६ | |
| ५ | रवि | ७ | |
| ६ | सोम | ८ | |
| ७ | मंगल | ९ | |
| ८ | बुध | १० | |
| ९ | गुरू | ११ | |
| ११ | शुक्र | १२ | |
| १२ | शनि | १३ | योगिनी एकादशी व्रतम्। |
| १३ | रवि | १४ | |
| १४ | सोम | १५ | |
| ३० | मंगल | १६ | तिलकायित बड़े श्री गिरिधारीजी महाराज को उत्सव (१८२५) |

# अधिक आषाढ़ शुक्ल पक्ष

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | बुध | १७ | इष्टिः। श्री पुरुषोत्तम मास को आरम्भः श्रीकूं भोग धरिके एक कांस्य के पात्र में ३३ पूवा अथवा पक्वान्न धरके वाको प्रतिदिन दान या मास में प्रशस्त हे। नित्य न बन सके तो हूं प्रथम दिन तथा आगे लिखे पांच पर्वन में अवश्य करनो। दान के श्लोक पृष्ठ ३१ पर लिखे है। पुरुषोत्तम मास सम्बन्धी भोग स्नान दान आदि नियमन को आरम्भ। नित्य सेवा को विशेष नियम तथा भगवन्नामजप, गीता भागवतादि को पाठ यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन गोपूजनादि जो बन सके सो कछू भी सत्कृत्य नित्य अवश्य करनो। दान को संकल्प पृष्ठ ३० पर लिख्यो है। |
| २ | गुरू | १८ | |
| ३ | शुक्र | १९ | |
| ४ | शनि | २० | |
| ५ | रवि | २१ | |
| ६ | सोम | २२ | |
| ७ | मंगल | २३ | |
| ८ | बुध | २४ | या दिन व्यतीपात है तासूं यह भी पुण्यदिन हैं। |
| ९ | गुरू | २५ | |
| ९ | शुक्र | २६ | |
| १० | शनि | २७ | |
| ११ | रवि | २८ | कमला एकादशी व्रतम् दोनों एकादशी में पात्र दान दूधघर की अथवा फलाहर की वस्तु सों करनों चाहिये। दान नित्य न बन सके तो हूं दोऊ द्वादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, व्यतीपात इन पाँच पर्वन में तो अवश्य ही करनो। इन पाँच पर्वन में गोपूजन को बड़ो ही फल है। |
| १२ | सोम | २९ | पुण्यदिनम् |
| १३ | मंगल | ३० | |
| १४ | बुध | १ | जुलाई। |
| १५ | गुरू | २ | इष्टिः। पुण्यदिनम् |

## अधिक आषाढ़ कृष्णपक्षः

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| २ | शुक्र | ३ | या दिन वैधृति हे तांसू ये भी अति पुण्यसमय हे श्री के कछू भी मनोरथ आदि अवश्य करनो। |
| ३ | शनि | ४ | |
| ४ | रवि | ५ | |
| ५ | सोम | ६ | |
| ६ | मंगल | ७ | |
| ७ | बुध | ८ | |
| ८ | गुरू | ९ | |
| ९ | शुक्र | १० | |
| १० | शनि | ११ | |
| ११ | रवि | १२ | कमला एकादशी व्रतम् |
| १२ | सोम | १३ | पुण्य दिनम् |
| १३ | मंगल | १४ | |
| १४ | बुध | १५ | |
| ३० | गुरू | १६ | पुण्य दिनम्। पुरुषोत्तम मास की समाप्ति। इष्टिः। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | शुक्र | १७ | रथयात्रा। |
| २ | शनि | १८ | |
| ३ | रवि | १९ | |
| ४ | सोम | २० | |
| ५ | मंगल | २१ | श्री द्वारकाधीशजी को पाटोत्सव। |
| ६ | बुध | २२ | कसूंभा छट्ठ। षष्ठी पण्डगू। तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज गादी विराजे सो उत्सव तथा तिलकायित श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज गादी विराजे।(२०५७) |
| ७ | गुरू | २३ | |
| ८ | शुक्र | २४ | |
| ९ | शनि | २५ | |
| १० | रवि | २६ | |
| ११ | सोम | २७ | देवशयनी एकादशी व्रतम्। चातुर्मास्यनियमारम्भः । |
| १२ | मंगल | २८ | |
| १३ | बुध | २९ | |
| १४ | गुरू | ३० | |
| १५ | शुक्र | ३१ | पर्वात्मक उत्सव चातुर्मास्यनियमारम्भः एकादशी कूं न भयो होय तो द्वादशी अथवा पूर्णिमा के दिन करनो तामे पूर्णिमा मुख्य। |

| वल्लभाब्द ५३८ | | श्रावण (गु. आषाढ़) कृष्णपक्षः | विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | शनि | १ | अगस्त, इष्टिः। हिन्दोलारम्भः। |
| २ | रवि | २ | |
| ३ | सोम | ३ | श्री चन्द्रमाजी को पाटोत्सवः चतुर्थी का क्षय होयवे सूं आज। |
| ५ | मंगल | ४ | |
| ६ | बुध | ५ | |
| ७ | गुरू | ६ | |
| ८ | शुक्र | ७ | जन्माष्टमी की बधाई |
| ९ | शनि | ८ | |
| १० | रवि | ९ | तिलकायित श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज को उत्सव हांडी उत्सव। (१७६३) |
| ११ | सोम | १० | कामिका एकादशी व्रतम्। |
| १२ | मंगल | ११ | |
| १३ | बुध | १२ | |
| १४ | गुरू | १३ | |
| ३० | शुक्र | १४ | हरियाली अमावस। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | शनि | १५ | इष्टिः। |
| २ | रवि | १६ | |
| ३ | सोम | १७ | ठकुरानी तीज मधुस्रवा। |
| ४ | मंगल | १८ | |
| ५ | बुध | १९ | नाग पंचमी। |
| ५ | गुरू | २० | |
| ६ | शुक्र | २१ | |
| ७ | शनि | २२ | |
| ८ | रवि | २३ | |
| ९ | सोम | २४ | सात स्वरूप को उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। |
| १० | मंगल | २५ | |
| ११ | बुध | २६ | पुत्रदा एकादशी व्रतम् पवित्रारोपणं सायं उत्थापन में याही दिन सात स्वरूप कूं पवित्रा धरायवे को विशेष उत्सव। नित्य लीलास्थ गोस्वामि तिलकायित १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। |
| १२ | गुरू | २७ | गुरुन कूं पवित्रा धरावने। |
| १३ | शुक्र | २८ | श्री विट्ठलेशरायजी महाराज को उत्सव। (१६५७), चतुर्दशी को क्षय होयवे सूं आज। ऋग्वेदीन की श्रावणी |
| १५ | शनि | २९ | रक्षा बन्धनं सायं उत्थापन में, गुसांईजी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीगिरधरजी के लालजी श्री दामोदरजी महाराज को उत्सव (१६३२) आपस्तम्ब हिरण्यकेशीय बौधायन काण्व माध्यन्दिन प्रभृति, सर्व यजुर्वेदीन तथा अथर्ववेदीन की श्रावणी। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | रवि | ३० | इष्टिः। गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज को उत्सव।(१९१७) हेमहिन्दोला। |
| २ | सोम | ३१ | हिन्दोला विजय। |
| ३ | मंगल | १ | सितम्बर, कज्जली तीज। |
| ४ | बुध | २ | |
| ५ | गुरू | ३ | |
| ७ | शुक्र | ४ | शयन में षष्ठी को उत्सव। विष्णुस्वामि प्राकट्योत्सव। सप्तमी को क्षय होयवे सूं आज। |
| ८ | शनि | ५ | जन्माष्टमी व्रतम्। |
| ९ | रवि | ६ | नन्दमहोत्सव। |
| १० | सोम | ७ | |
| ११ | मंगल | ८ | अजा एकादशी व्रतम्। |
| १२ | बुध | ९ | |
| १३ | गुरू | १० | |
| १३ | शुक्र | ११ | |
| १४ | शनि | १२ | काका वल्लभजी को उत्सव। (१७०३) |
| ३० | रवि | १३ | कुश ग्रहणी अमावस। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | सोम | १४ | इष्टिः। राधाष्टमी की बधाई। |
| २ | मंगल | १५ | सामवेदीन की श्रावणी। |
| ३ | बुध | १६ | |
| ४ | गुरू | १७ | गणेश चतुर्थी। |
| ५ | शुक्र | १८ | ऋषि पंचमी। द्वितीय स्वरूपोत्सव। |
| ६ | शनि | १६ | तिलकायित श्री विट्ठलेशजी महाराज को उत्सव।(१७४४) |
| ७ | रवि | २० | |
| ८ | सोम | २१ | राधाष्टमी । |
| ६ | मंगल | २२ | |
| १० | बुध | २३ | |
| ११ | गुरू | २४ | नवलक्ष ग्रन्थकर्त्ता श्री पुरुषोत्तमजी महाराज को उत्सव। (१७१४) परिवर्तिनी एकादशी व्रतम् (दान एकादशी) वामन द्वादशी |
| १२ | शुक्र | २५ | |
| १३ | शनि | २६ | |
| १४ | रवि | २७ | |
| १५ | सोम | २८ | सांझी को आरम्भः। श्राद्धपक्ष का आरम्भ। ताको निर्णय पृष्ठ (३२) एवं श्राद्ध का संकल्प पृष्ठ (३३) पर लिख्यो है। खग्रास चन्द्रग्रहण नाथद्वारा में अदृश्य। निर्णय पृष्ठ ३० पर अंकित है। इष्टिः। |

| वल्लभाब्द ५३८ | आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्षः | | विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| २ | मंगल | २९ | |
| ३ | बुध | ३० | |
| ४ | गुरू | १ | अक्टूम्बर |
| ५ | शुक्र | २ | श्री हरिरायजी को उत्सव। (१६४७) |
| ६ | शनि | ३ | |
| ७ | रवि | ४ | |
| ८ | सोम | ५ | श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी के पुत्र श्री पुरूषोत्तमजी को उत्सव। (१५८७) |
| ९ | मंगल | ६ | |
| १० | बुध | ७ | |
| ११ | गुरू | ८ | इन्दिरा एकादशी व्रतम् (महादान)। |
| १२ | शुक्र | ९ | श्री महाप्रभुजी के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथजी को उत्सव। (१५६७) |
| १३ | शनि | १० | श्री गुसांईजी के तीसरे लालजी श्रीबालकृष्णजी को उत्सव। (१६०६) |
| १४ | रवि | ११ | |
| ३० | सोम | १२ | सोमवती अमावस एवं सर्वपितृ अमावस कोटकी आरती और सांझी की समाप्ति। |

| वल्लभाब्द ५३८ | | | आश्विन शुक्लपक्षः  विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | मंगल | १३ | इष्टिः। नवरात्रारम्भः। मातमह श्राद्ध |
| १ | बुध | १४ | |
| २ | गुरू | १५ | |
| ३ | शुक्र | १६ | |
| ४ | शनि | १७ | श्री दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव (दुहेरा मनोरथ) (१८५४) |
| ५ | रवि | १८ | |
| ६ | सोम | १९ | सरस्वती पूजनारम्भः। |
| ७ | मंगल | २० | |
| ८ | बुध | २१ | |
| ९ | गुरू | २२ | दशहरा (विजया दशमी) सरस्वती विसर्जनम्। |
| १० | शुक्र | २३ | श्री गिरधरजी के प्रथम लालजी श्री मुरलीधरजी को उत्सव। |
| ११ | शनि | २४ | पाशांकुशा एकादशी व्रतम्। |
| १३ | रवि | २५ | श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः। |
| १४ | सोम | २६ | शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)। |
| १५ | मंगल | २७ | कार्तिक स्नानारम्भः |

| वल्लभाब्द ५३८ | | | कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्णपक्षः विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | बुध | २८ | इष्टिः। |
| २ | गुरू | २६ | |
| ३ | शुक्र | ३० | |
| ५ | शनि | ३१ | |
| ६ | रवि | १ | नवम्बर |
| ७ | सोम | २ | |
| ८ | मंगल | ३ | |
| ६ | बुध | ४ | |
| ६ | गुरू | ५ | |
| १० | शुक्र | ६ | |
| ११ | शनि | ७ | रमा एकादशी व्रतम्। |
| १२ | रवि | ८ | |
| १३ | सोम | ६ | धनतेरस। |
| १४ | मंगल | १० | रूप चतुर्दशी (अभ्यंग) |
| ३० | बुध | ११ | दीपोत्सव (दीपावली) हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्) कान जगाई। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | गुरू | १२ | इष्टिः। अन्नकूटोत्सवः। गोवर्द्धनपूजा। गुर्जराणां २०७२ वर्षारम्भः। |
| २ | शुक्र | १३ | यम द्वितीया। |
| ३ | शनि | १४ | |
| ४ | रवि | १५ | |
| ५ | सोम | १६ | |
| ६ | मंगल | १७ | |
| ७ | बुध | १८ | श्री नवनीत प्रभु को व्रज में पधरायवे को विशेष उत्सव गो. ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत। (२०६३) |
| ८ | गुरू | १९ | गोपाष्टमी। |
| ९ | शुक्र | २० | अक्षय नवमी। कृत युगादि कूष्माण्डदानम्। |
| १० | शनि | २१ | |
| ११ | रवि | २२ | प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में |
| १२ | सोम | २३ | श्री गुसांईजी के प्रथम लालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव। (१६११) |
| १३ | मंगल | २४ | |
| १४ | बुध | २५ | ति.श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव (१८७६) चार स्वरूप को उत्सव। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलकायित श्री १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज कृत। चातुर्मास्य तथा कार्तिक के नियम की समाप्ति। गोपमासारम्भः। पूर्णिमा का क्षय होयवे सूं आज। |

वल्लभाब्द ५३८ **मार्गशीर्ष (गु. कार्तिक) कृष्णपक्षः** विक्रमाब्द २०७२

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | गुरू | २६ | इष्टिः।(व्रतचर्या) अथवा गोपमासारम्भः। |
| २ | शुक्र | २७ | |
| ३ | शनि | २८ | |
| ४ | रवि | २६ | छः स्वरूप को उत्सव तिलकायित श्री दाऊजी महाराज कृत। |
| ५ | सोम | ३० | |
| ६ | मंगल | १ | दिसम्बर |
| ७ | बुध | २ | गो.ति. १०८ श्री गोविन्दलालजी महाराज को उत्सव।(१६८४) |
| ८ | गुरू | ३ | श्री गुसांईजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव। (१५६६) |
| ६ | शुक्र | ४ | |
| १० | शनि | ५ | |
| १० | रवि | ६ | |
| ११ | सोम | ७ | उत्पत्ति एकादशी व्रतम्। |
| १२ | मंगल | ८ | श्री नवनीत प्रभु कूं व्रज सूं नाथद्वारा निज मन्दिर में पधरायवे को उत्सव। गो.ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज कृत (२०६३) |
| १३ | बुध | ६ | श्री गुसांईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८) |
| १४ | गुरू | १० | |
| ३० | शुक्र | ११ | |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | शनि | १२ | इष्टिः। |
| २ | रवि | १३ | |
| ३ | सोम | १४ | |
| ४ | मंगल | १५ | |
| ५ | बुध | १६ | श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सवः। धनुर्मासाराम्भः |
| ६ | गुरू | १७ | |
| ७ | शुक्र | १८ | श्री गुसांईजी के चतुर्थलालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८) |
| ८ | शनि | १६ | सात स्वरूप को उत्सव श्री गोवर्द्धनेशजी महाराज कृत। श्री गुसांईजी के उत्सव की बधाई। नवमी को क्षय होयवे सूं आज। |
| १० | रवि | २० | |
| ११ | सोम | २१ | मोक्षदा एकादशी व्रतम्। |
| १२ | मंगल | २२ | |
| १३ | बुध | २३ | |
| १४ | गुरू | २४ | |
| १५ | शुक्र | २५ | छप्पन भोग बलदेवजी को उत्सव कितनेक माने है। गोपमास समाप्ति। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | शनि | २६ | इष्टिः। नित्यलीलास्थ गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री दाऊजी (श्री राजीवजी) महाराज को उत्सव। (२००५) |
| २ | रवि | २७ | |
| ३ | सोम | २८ | |
| ४ | मंगल | २६ | |
| ५ | बुध | ३० | |
| ६ | गुरू | ३१ | |
| ७ | शुक्र | १ | जनवरी सन् २०१६ को प्रारम्भः। श्री गुसांईजी के ज्येष्ठ पौत्र श्री गोविन्दजी के पुत्र श्री कल्याणरायजी को उत्सव। (१६२५) |
| ८ | शनि | २ | |
| ६ | रवि | ३ | श्री मत्प्रभुचरण श्री विट्ठलनाथजी को उत्सव। (१५७२) |
| १० | सोम | ४ | |
| ११ | मंगल | ५ | तिलकायित श्री गोविन्दजी महाराज को उत्सव। (१७६६) |
| १२ | बुध | ६ | सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य भोग धरनो, फलन के दान अवश्य करनो। |
| १२ | गुरू | ७ | |
| १३ | शुक्र | ८ | |
| १४ | शनि | ६ | गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज के पुत्र **चि.गो.श्री भूपेश कुमारजी (श्री विशाल बावा)** को जन्मदिन। (२०३७) अमावस्या को क्षय होयवे सूं आज। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | रवि | १० | इष्टिः। |
| २ | सोम | ११ | |
| ३ | मंगल | १२ | |
| ४ | बुध | १३ | |
| ५ | गुरू | १४ | भोगी, धनुर्मास की समाप्ति। |
| ६ | शुक्र | १५ | मकर संक्रान्ति। तिलवा गोपीवल्लभ में ता पीछे दान श्राद्धादि करने। अबके यह संक्रांति ५ गुरू कूं रात्रि के १ बजके २७ मिनिट पे बैठे हैं। तांसू पुण्यकाल आज सूर्योदय से लेके दिन के ३ बजके २३ मिनिट पर्यन्त है। तामे भी सूर्योदय के पास के २ घंटा अति मुख्य पुण्यकाल है। उत्तरायण। नित्यलीलास्थ गो.श्री १०८ श्री दामोदरलालजी महाराज को उत्सव। (१९५३) |
| ७ | शनि | १६ | |
| ८ | रवि | १७ | |
| ९ | सोम | १८ | |
| १० | मंगल | १९ | |
| ११ | बुध | २० | पुत्रदा एकादशी व्रतम्। |
| १२ | गुरू | २१ | |
| १३ | शुक्र | २२ | |
| १४ | शनि | २३ | माघ स्नानारम्भः। |

| वल्लभाब्द ५३८ | माघ (गु. पौष) कृष्णपक्षः | | विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | रवि | २४ | इष्टिः। |
| १ | सोम | २५ | |
| २ | मंगल | २६ | |
| ३ | बुध | २७ | |
| ४ | गुरू | २८ | |
| ५ | शुक्र | २९ | |
| ६ | शनि | ३० | |
| ७ | रवि | ३१ | |
| ८ | सोम | १ | फरवरी, बड़े दामोदरजी (श्री दाऊजी) महाराज को उत्सव। (१७११) |
| ९ | मंगल | २ | |
| १० | बुध | ३ | |
| ११ | गुरू | ४ | षट्तिला एकादशी व्रतम्। तिलकी वस्तु अवश्य भोग धरनो तिल के दान भक्षणादि करने। |
| १२ | शुक्र | ५ | |
| १३ | शनि | ६ | |
| १४ | रवि | ७ | |
| ३० | सोम | ८ | सोमवती अमावस। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | मंगल | ९ | इष्टिः। |
| २ | बुध | १० | |
| ३ | गुरू | ११ | |
| ४ | शुक्र | १२ | श्री मुकुन्दरायजी को पाटोत्सव। बसन्त पंचमी। पंचमी को क्षय होयवे सूं आज। |
| ६ | शनि | १३ | |
| ७ | रवि | १४ | |
| ८ | सोम | १५ | |
| ९ | मंगल | १६ | |
| १० | बुध | १७ | |
| ११ | गुरू | १८ | जया एकादशी व्रतम्। |
| १२ | शुक्र | १९ | |
| १३ | शनि | २० | |
| १४ | रवि | २१ | |
| १५ | सोम | २२ | माघ स्नान समाप्तिः। होरीडांडो दण्डारोपणं आज सूर्यास्तानन्तरं सायं ६ बजके ३३ मिनिट के पश्चात् यही समय धमार को आरम्भ। रोपणी को उत्सव। |

| वल्लभाब्द ५३८ | | | फाल्गुन (गु. माघ) कृष्णपक्षः विक्रमाब्द २०७२ |
|---|---|---|---|
| **तिथि** | **वार** | **दि.** | **उत्सव** |
| १ | मंगल | २३ | इष्टिः। |
| २ | बुध | २४ | |
| ३ | गुरू | २५ | |
| ४ | शुक्र | २६ | |
| ४ | शनि | २७ | |
| ५ | रवि | २८ | |
| ६ | सोम | २९ | |
| ७ | मंगल | १ | मार्च, श्रीनाथजी को पाटोत्सवः। |
| ८ | बुध | २ | |
| ९ | गुरू | ३ | |
| १० | शुक्र | ४ | |
| ११ | शनि | ५ | विजया एकादशी व्रतम्। |
| १२ | रवि | ६ | |
| १३ | सोम | ७ | |
| १४ | मंगल | ८ | |
| ३० | बुध | ९ | इष्टिः। खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण नाथद्वारा में अदृश्य। निर्णय पृष्ठ २९ पर लिख्यो है। |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| २ | गुरू | १० | |
| ३ | शुक्र | ११ | |
| ४ | शनि | १२ | |
| ५ | रवि | १३ | |
| ६ | सोम | १४ | |
| ७ | मंगल | १५ | श्री मथुरेशजी को पाटोत्सवः। गोस्वामि तिलकायित १०८ **श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी)** महाराज को जन्मदिन।(२००६) |
| ८ | बुध | १६ | होलिकाष्टकारम्भः। |
| ९ | गुरू | १७ | |
| १० | शुक्र | १८ | |
| ११ | शनि | १९ | आमलकी (कुंज) एकादशी व्रतम्। |
| १२ | रवि | २० | |
| १३ | सोम | २१ | |
| १४ | मंगल | २२ | होली होलिका प्रदीपनं पूर्णिमा बुध के सूर्योदय प्रातः ६ बजके ४३ मिनिट सूं पूर्व। |
| १५ | बुध | २३ | दोलोत्सव (डोल) धूलिवन्दन (धुरेण्डी) |

| तिथि | वार | दि. | उत्सव |
|---|---|---|---|
| १ | गुरू | २४ | इष्टिः। द्वितीया पाट। |
| २ | शुक्र | २५ | |
| ३ | शनि | २६ | |
| ४ | रवि | २७ | |
| ५ | सोम | २८ | |
| ६ | मंगल | २९ | |
| ६ | बुध | ३० | |
| ७ | गुरू | ३१ | |
| ८ | शुक्र | १ | अप्रेल |
| ९ | शनि | २ | |
| १० | रवि | ३ | |
| १२ | सोम | ४ | पाप मोचिनी एकादशी व्रतम्। |
| १३ | मंगल | ५ | |
| १४ | बुध | ६ | |
| ३० | गुरू | ७ | वर्षे हर्षः प्रकर्षः स्यात्। |

# ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्रग्रहण

संवत् २०७२ शक १९३७ चैत्रशुक्ल १५ शनिवार दिनांक ४.४. २०१५ को रात्रि में भारत वर्ष में ग्रस्तोदित खग्रास चन्द्र ग्रहण होयगो। नाथद्वारा में या दिन दिनमान ३१ घड़ी ०७ पल सूर्योदय ६ बजके २५ मिनिट सूर्यास्त ६ बजके ५२ मिनिट पर है। नाथद्वारा में स्पर्श दोपहर ३ बजके ४५ मिनिट पर मध्य ५ बजके ३० मिनिट मोक्ष रात्रि ७ बजके १५ मिनिट पर्वकाल ३ घण्टा ३० मिनिट को होयगो। १५ शनिवार के सूर्योदय सू पूर्व ३ बजके ३१ मिनिट सूं ही वेध लगे हैं तासूं सूर्योदय से पूर्व ३ बजके ३१ मिनिट पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। दोपहर १२ बजके ३६ मिनिट पूर्व ही जल पीयो जायगो। बिना जनेऊ के बालक तथा छोटी कन्या दोपहर १२ बजके ३६ मिनट के पूर्व ही प्रसाद ले सकेंगे। १५ शनिवार के दिन सवेरे बेग ही राजभोग हो जाय। राजभोग की सखड़ी गायन को जाये। दोपहर कूं श्री कूं या सुमार पे जगावने ताकि ३ बजके १५ मिनिट तक संध्या आरती पर्यन्त की सेवा हो जाये। सेवा में सुपेदी सब कोरी राखनी, रसोई, बालभोग आदि स्थल तथा पात्रन की शुद्धि ग्रहण में जैसी होती होय वैसी करनी। सर्वत्र दर्भ धरने अनवसर को भोग साज, शय्या प्रभृति उठ जाय और खासा हो जाय स्पर्श सूं चारेक मिनिट पूर्व झारी बंटा हूं पट्ट वस्त्र सूं उठावने दर्शन खोलिके जपादि करने ५ बजके ३० मिनिट पर श्री के आगे दान को संकल्प करनो, खिचड़ी को डबरा घृत दक्षिणा सहित प्रायः सर्वत्र दियो जाय है। प्रत्यक्ष अथवा निष्क्रय द्वारा गोदान जहां जेसो हो तो होय वेसो कियो जाय। मनुष्य भी यथा शक्ति दानादिक अवश्य करें। मोक्ष भये पीछे चार पाँच मिनिट ठहर के स्नानादि करने। शुद्ध होय नवीन जल सूं झारी भरनी। श्री कूं स्नान करायके ग्रहण पीछे को भोग तथा शयनभोग धरनो तथा पीछे ब्राह्मण भोजन पूर्व प्रसाद लेनो।

| स्टे. टा | स्पर्श | मध्य | मोक्ष | पर्व |
|---|---|---|---|---|
| घन्टा | ३ | ५ | ७ | ३ |
| मिनिट | ४५ | ३० | १५ | ३० |

यह ग्रहण

मेष, कर्क, वृश्चिक, धनु वारे न कूं शुभ

वृषभ, सिंह, मकर, मीन वारे न कूं मध्यम

मिथुन, कन्या, तुला, कुम्भ वारे न कूं अशुभ

जिनको जन्म नक्षत्र हस्त होय उनकूं अधिक अनिष्ट। जिनकूं ग्रहण अनिष्ट होय उनकूं विशेष दानादिक करने एक कांस्य के पात्र में तातों पतरो घृत भरिके सुवर्ण को नाग तथा चन्द्र बिम्ब धरिके वा ताते पतरे घृत में मुख देखिके दक्षिणा सहित दान करनो ताको मन्त्र

**तमोमय महाभीम सोम सूर्य विमर्दन।**
**हेमतार प्रदानेन मम शान्ति प्रदोभव।।१।।**
**विधुन्तुद नमस्तुभ्यं सिंहका नन्दना ऽच्युत।**
**दानेनानेन नागस्य रक्ष मां वेधजाद् भयात्।।२।।**

२. संवत् २०७२ भाद्रपद शुक्ल १५ सोमवार दि. २८.६.२०१५ को ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्र ग्रहण नाथद्वारा में अदृश्य होयगो यह ग्रहण गुजरात प्रांत के राजकोट, मोरबी जामनगर, जूनागढ़, द्वारका, गोण्डल, भुज तथा राजस्थान के जैसलमेर आदि जहाँ सूर्योदय ६ बजके ३७ मिनिट बाद होयगो तहाँ मान्यो जायेगो।

३. संवत् २०७२ फाल्गुन कृष्ण ३० बुध दि. ६.३.२०१६ खण्डग्रास सूर्यग्रहण नाथद्वारा में अदृश्य होयगो। भारतीय मानचित्र के पूर्वी उत्तरी क्षेत्रों में ग्रस्तोदित दृश्य होयगो तहाँ मान्यो जायेगो।

गणितकर्त्ता :
**त्रिपाठी राजेश्वर यदुन्दन जी शास्त्री**
मो. : ९४१४४७३०१६

# अधिक मास के दान को संकल्प

अधिक में नित्य अथवा पूर्वोक्त पाँच पर्वन मे पूवा ३३ अथवा पक्वान्न ३३ कांस्य के पात्र में धरिके दक्षिणा सहित देने बने तो घृत सुवर्ण तथा वस्त्र हू संग देने, ताको संकल्प आचमन प्राणायाम करके करनो।

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेष्टाविशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बू-द्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे (अमुकदेशे) बौद्धावतारे द्वासप्त्युत्तर द्विसहस्त्र संख्याके कीलकनाम्निविक्रमाब्दे सप्तत्रिंशदुत्तरे एकोनविशंतिशततमे मन्मथनाम्नि शकाब्दे (नर्मदा के दक्षिण तीर सूं लेके शालिवाहन शके मन्मथनाम्नि संवत्सरे ऐसे कहनो) उत्तरायणे ग्रीष्मर्तौ दक्षिणायने वर्षर्त्तौ अधिकाषाढपुरुषोत्तम मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरन्वितायाममुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे मिथुनराशिस्थिते श्रीसूर्ये अधिक आषाढ़ शुक्ल १ बुध तः अधिक आषाढ़ कृष्ण १२ सोम पर्यन्त कर्क राशिस्थिते श्रीदेवगुरौ तदनन्तरम् अधिक आषाढ़ कृष्ण १३ मंगल तः अमावस्या गुरू पर्यन्त सिंह राशिस्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथाराशिस्थानस्थितेषु सत्स्वेवंग्रहण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ मम वर्षत्रयोपार्जित कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक समस्त पापक्षयार्थं पुराणोक्त शुभफलप्राप्त्यर्थ श्रीगोपीजनवल्लभप्रीत्यर्थ मिमांस्त्रयस्त्रिशदपूपान् विष्ण्वादि श्रीपत्यन्तत्रयस्त्रि शद्देवतान् श्रीपुरुषोत्तमदेवतान् कांस्यपात्रस्थितान् सघृतान् सहिरण्यान् सवस्त्रान् सदक्षिणाकान् यथानामगोत्राय यस्मै कस्मैचिद् ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये तेन पुण्येन भगवान् सर्वात्मा श्रीगोपीजनवल्लभः प्रीयताम्। अपूप के ठिकाने पक्वान्न होयतो ''अपूपस्थानापन्न पक्वान्नानि'' ऐसो कहनो और घृत हिरण्य वस्त्रन में सूं जो न होय ताको नाम उच्चारण नहीं करनो -

विष्णुरूपी सहस्त्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः।
अपूपान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु।।१।।
नारायण जगद्बीज भास्करप्रतिरूपधृक्।
दानेनानेन पुत्रांश्च सम्पदं चाभिवर्द्धय।।२।।
यस्य हस्ते गदाचके गरुडो यस्य वाहनः।
शंख करतले यस्य स मे विष्णुः प्रसीदतु।।३।।
कलाकाष्ठादिरूपेण निमेषघटिकादिना।
यो वंचयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः।।४।।
कुरुक्षेत्र समो देशः कालः पर्व द्विजोहरिः।
पृथ्वीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम।।५।।
मलानां च विशुद्धयूर्थं पापप्रशमनाय च।
पुत्रपौत्रादिभिवृद्धयर्थं तव दास्यामि भास्कर।।६।।

पूवा देने होय तो इन श्लोकन मे सूं प्रथम श्लोक में ''अपूपान्न'' है सोही कहनो और पक्वान्न होय तो ''पक्वान्नानां प्रदानेन'' ऐसो कहनो। पुरुषोत्तम मास के स्नान दानादि नियम नित्य न बन सके तो हू वदि ११ रविवार सूं ३० गुरूवार पर्यन्त ५ दिन अवश्य करनो चाहिये।

।इतिशुभम्।

महाप्रभु जी के उपदेश

१. भगवत्स्मरण करने वाला बाहर एवं भीतर से सदा शुद्ध रहता है।

२. जो भगवान् के दर्शन की भी प्रतीक्षा में रहता है उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

# श्राद्धपक्ष को निर्णय

## आश्विन (गु. भाद्रपद) कृष्णपक्ष ।

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा सोम को १ का श्राद्ध, २ मंगल से लेकर आश्विन शुक्ल १ मंगल तक सब श्राद्ध तिथि प्रमाणे करने। जाकी मरण तिथि पूर्णिमा होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या में सूं कोई भी दिन करनो ।

भाद्रपद की पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष में नही है। ३ बुध के दिन भरणी नक्षत्र है तासूं पिण्ड रहित श्राद्ध करिवे सूं गया श्राद्ध जैसो फल लिख्यो है ६ शनिवार के दिन श्राद्ध समय व्यतीतपात भी है तासूं ये दिवस श्राद्धादिक में विशेष प्रशस्त है तासूं कोई भी तिथि को श्राद्ध रही गयो होय या रहि जायवे को संभव होय तो इन दिनन में श्राद्ध करनो। ९ मंगल के दिन मातृनवमी के श्राद्ध माता प्रभृति सुवासिनी मृत भई होय तो एवाती सुवासिनी भी अवश्य जिमावनी याही दिन १२ शुक्र के दिन सन्यासीन को महालय श्राद्ध या ही दिन श्राद्ध समय मघा नक्षत्र भी है तासूं मघा निमित्त श्राद्ध अवश्य करनो चाहिए। जो न बन सके तो सर्व पितृगण के नामोच्चारण पूर्वक एक संकल्प करके ब्राह्मण भोजन अवश्य ही करवानो। क्योंकि जो श्राद्ध में ब्राह्मण भोजन कछु भी न करें ता कूं दोष लिख्यो है।

१४ रवि कूं चतुर्दशी निमित्तक घायलन के श्राद्ध, जल शास्त्र आदि सूं मरण पायो होय उनके ही या दिन श्राद्ध, जाकी मरण तिथि चतुर्दशी होय ताको महालय श्राद्ध अष्टमी, द्वादशी, अमावस्या व्यतीपात या मे सूं कोई भी दिन में करनो । ३० सोम कूं सोमवती एवं सर्वपितृ अमावस्या तथा आश्विन शुक्ल १ मंगल कूं मातामह श्राद्ध ।

# श्राद्धपक्ष को संकल्प

ऊँ विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमान स्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेंऽष्टाविंशति तम कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोके जंबूद्वीपे भारत वर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तैक देशे अमुक देशे बौद्धावतारे कीलक नाम्नि एकसप्ततिः अधिक द्विसहस्त्र संख्याके वैक्रमाब्दे शकानुसारेण मन्मथ नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरदृतौ आश्विन मासे (गुर्जर भाद्रपद मासे) कृष्णपक्षे अमुक तिथौ वासरान्वितायां नक्षत्र योगे-करणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे, कन्या राशि स्थिते सूर्ये सिंह राशि स्थिते श्री देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा राशि स्थानस्थितेषु सत्स्वेवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (नाम सम्बन्ध ोच्चारणं) एतेषां यथानाम् गौत्र रूपाणां पुरुष विषये सपत्नीकानां स्त्री विषये सभर्तृक सापत्या विधिनामहालयापर पक्ष श्राद्धमथवा सकृन्महालया पर पक्ष श्राद्ध सदैवं सद्यः करिष्येः

इति श्राद्ध पक्ष निर्णय समाप्त।

महाप्रभु जी के उपदेश

१. भक्तों के लौकिक कार्य भी भगवान् के लिये ही होते हैं जो भगवान् की सेवा एवं स्मरण करते हैं उनके सभी कार्य भगवान् स्वयं करते हैं।

२. भगवान् का मन से स्मरण करने, वाणीद्वारा गुण वर्णन करने, कानों से कथा सुनने एवं हाथों से सेवा करने, पैरों से भगवान् की परिक्रमा करने आदि से तथा शिर से भगवान् को प्रणाम करने से सर्वत्र भगवान् ही है ऐसा अनुभव होने लगता है।

३. सत्य बोलने वाले देवी जीव है तथा असत्य बोलने वाले आसुर जीव है।

लेखक : त्रिपाठी यदुनन्दन नारायण जी शास्त्री, विद्याविभागाध्यक्ष
विद्या विभाग मन्दिर मण्डल नाथद्वारा

# वर्तमान गोस्वामि बालकन के जन्म दिन की गुर्जरमासानुसार सूचना

## श्री नाथद्वारा

फाल्गुन शु. ७
गोस्वामि तिलकायित श्री १०८
**श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) महाराज**

श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी) के लालजी १
मार्ग. कृ. ३० चि. गो. श्री भूपेशकुमारजी
**(श्री विशाल बावा)**

आषा. कृ. १३ गो. कल्याणरायजी

गो. कल्याणरायजी के लालजी २
पौ.कृ. ६ चि. श्रीहरिरायजी

अश्विन शु. ६ चि. श्रीवागधीशजी

चि. हरिरायजी के लालजी २
माघ शु. १३ चि. श्री वदान्य राय जी
(श्री गिरधर जी)

फा. शु. ३ चि. द्विजराज जी

पौष शु. ५ गो. श्री गोकुलोत्सवजी

श्रीगोकुलोत्सवजी के लालजी १
फा.शु. ४ चि. श्री अभिनवाचार्यजी
(श्रीव्रजोत्सवजी)

चि. अभिनवाचार्य जी के लालजी १
वै.शु. १२ चि. व्रजेश्वरजी (श्रीउमंगजी)

वै.कृ. ४ गो. दिव्येशजी

गो. श्री दिव्येश जी के लाल जी १
चै. शु. १४ श्री प्रिय व्रजराय जी
श्री देवकीनन्दन जी

## कांकरोली

पौ.शु. १० गो. श्रीवृजेशकुमारजी

चै.कृ. ४ गो. पीताम्बरजी

वै.कृ. ६ गो. त्रिलोकीभूषणजी

श्रीव्रजेशकुमारजी के लालजी २
ज्ये.शु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

फा.कृ. ४ चि. द्वारकेशजी

श्रीपीताम्बरजी के लालजी १
ज्ये. शु १४ चि. व्रजालंकारजी

गो. त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १
वै.कृ. १३ गो. चि. व्रजाभरणजी

श्रीपुरूषोत्तमजी के लालजी २
का. कृ. ६ गो. श्रीव्रजभूषणजी

का. शु. १० गो. चि. श्रीविट्ठलनाथजी

आ.शु.

चि.व्रजाभरण जी के लालजी १
भा. शु. २ चि. रणछोड़ राय जी

आ. सु. ६ गो. रविकुमारजी
गो. रविकुमारजी के लालजी २

श्रा. ३० चि. अवतंस बावा
(मधुरम जी)

माघ व. ४ चि. प्रियम बावा

## कोटा-बम्बई जतीपुरा

ज्ये. कृ ६ गो. लालमणीजी
लालमणीजी के लालजी २

श्रा.शु. ६ चि. गो. श्रीप्रभुजी
(मिलनकुमारजी)

चै. शु. ६ चि. द्वारकेशलालजी

श्री मिलनकुमारजी के लालजी १
श्रा.कृ.२ चि. रणछोड़ लालजी
(कृष्णास्थ बावा)

## कोटा-कड़ी

चै.शु. १० गो. गोपाललालजी

गोविन्दरायजी के लालजी

भा.कृ. ६ चि. व्रजेशकुमारजी

माघ.व. १० गो. चि. घनश्यामलालजी

आसो. सु. १० गो. दामोदरलालजी

चै. व. १२ गो. चि. वल्लभलालजी
गो. वल्लभलालजी के लालजी १

आषा. सु. ८ चि. पुरूषोत्तमजी

घनश्यामलालजी के लालजी २

फा.शु. ७ गो.चि. कृष्णकुमारजी
गो.चि. कृष्णकुमारजी के लालजी १

पौ.व. ११ गो.चि. व्रजपाललालजी

फा.शु. ११ चि. कुंजेशकुमारजी
गो. चि. कुंजेशकुमारजी के लालजी २

मार्ग.व. २ गो.चि. गोविन्दरायजी

आश्वि.व. ३ गो.चि. गोकुलमणीजी

गो. गोपाललाजी के लालजी २
आसो. व. ३ चि. विनयकुमारजी

आषा. व. ४ चि. शरदकुमारजी

श्रा.सु. ७ गो. त्रिलोकीभूषणजी
त्रिलोकीभूषणजी के लालजी १

ज्ये.कृ. १ राजीवलोचनजी

व्रजेशकुमारजी के लालजी ३

चै.शु. ६ चि यदुनाथजी

चि. यदुनाथजी के लालजी १
पौ.कृ. ५ चि. प्रद्युम्नजी

कार्ति. सु. १० चि. द्वारकेशजी

कार्ति सु. ७ चि. जयदेवजी
चि. जयदेवजी के लालजी १

मार्ग कृ. १३ चि. व्रजराजजी

चि. दामोदरलालजी के लालजी २
श्रा. व. १२ चि. हरिरायजी

ज्ये.व. १० चि दर्शन कुमारजी

चि. दर्शनकुमार जी के लालजी १
ज्ये. व. ४ चि. व्रजाधीश जी

## कामवन

फा. सु. २ गो. श्री वल्लभलालजी
गो. श्री वल्लभलालजी के लालजी २

भा. कृ. २ चि. श्री देवकीनंदनजी

श्रा. कृ. १० चि. श्री विट्ठलनाथजी

## कामवन/सूरत

आ. कृ. १४ गो. श्री द्वारकेशलालजी
गो.श्रीद्वारकेशलालजी के लालजी २

फा. शु. ३ चि. श्री अनिरुद्धलालजी

श्रा. कृ. १३ चि. श्री कन्हैयालालजी

च. श्री अनिरुद्धलालजी के लालजी २
भा. कृ. ४ चि. श्री गोविन्दजी

का. शु. ७ चि. श्री गोकुलचन्द्र जी

चि. श्री कन्हैयालालजी के लालजी १
का. शु. १० चि. श्री जयदेवजी

## कामनवन/भावनगर

भा. शु. १ गो. श्री नवनीतलालजी

गो. श्री नवनीतलालजी के लालजी १
का. शु. १ चि. श्री गोकुलेशजी

## कामवन/घाटकोपर

का. कृ. ११ गो. मुरलीधर जी
गो. मुरलीधरलालजी के लालजी १

मार्ग. शु. ४ चि. श्री जयदेवलालजी

चै. कृ. १३ गो. श्री रघुनाथलालजी
गो. श्री रघुनाथलालजी के लालजी २

मार्ग. शु. ६ चि. श्री गिरधरजी

श्रा. कृ. ५ चि. श्री दामोदर जी,

## कामवन

माघ. सु. १३ गो. घनश्यामजी

चै. सु. १५ गो. रघुनाथलालजी (गोकुल-मुम्बई)
गो. घनश्यामजी के लालजी ३

आष.सु. ११ चि. ब्रजेशकुमारजी

श्रा. व. ३ चि. गोपाललालजी

आसो. व १२ चि. कल्याणरायजी

गो. रघुनाथजी के लालजी १

माघ. सु. ४ चि. योगेशकुमारजी
चि. योगेशकुमारजी के लालजी २

आ. व. १३ चि. श्रीव्रजोत्सवजी

श्रा. कृ. ३० चि. व्रजपालजी (मुदितजी)

भा.सु. १४ गो. शिशिरकुमारजी

गो. चि. गोपालजी के लालजी १
आसो. व. ४ चि. लालजी

गो.चि.कल्याणरायजी के लालजी २
श्रा. व. ३ गो. चि. अनिरूद्धजी

भा. व. १ गो. चि. उपेन्द्रजी

चि. अनिरूद्धजी के लाल जी १
फा. कृ. ६ चि. रमणजी (रसेश जी)

## गोकुल

का. व. १० गो. देवकीनन्दनजी
गो. देवकीनन्दन के लालजी २

मा. व. ३० चि. वल्लभलालजी

का. सु. २ चि. विट्ठलनाथजी

## वीरमगाम

आसो. व. १४ गो. जयदेवलालजी
गो. जयदेवलालजी के लालजी ३

ज्ये. सु. १ चि. मथुरेशजी
चि. मथुरेशजी के लालजी १
आसो. व. १४ चि. रघुनाथ जी

आसो. व. ६ चि. ब्रजेशकुमारजी
चि. ब्रजेशकुमार जी के लालजी १
माघ व. ६ चि. रसिकप्रितमजी

चि. कन्हैयालालजी के लालजी १
श्रा. व. ८ चि. श्रीगोकुलेशजी

## सूरत

माघ. व ५ गो. कल्याणरायजी

मार्ग. सु. ११ गो. वल्लभलालजी

आषा. व. ४ गो. गोपेश्वरजी

पौ. व. ३ गो. मुकुन्दरायजी

गो. वल्लभलालजी के लालजी १
आसो. व. १ चि. अनुरागजी

गो. गोपेश्वरजी के लाल जी १

फाल्गु. व ६ चि. वत्सलराजजी

चि. अनुरागरायजी के लालजी १

आसो. व. ७ चि. पुरूषोत्तमरायजी

## बड़ोदरा, सूरत

चै. सु. ११ गो. मथुरेशजी

भा.व. ४ गो. चन्द्रगोपालजी

पौ. व. ५ गो. प्रभुजी

गो. मथुरेशजी के लालजी २
भा.सु. ६ चि. योगेशकुमारजी

भा.व. २ चि. द्रुमिलकुमारजी
गो. द्रुमिलकुमारजी के लालजी १

चि. व्रजराजकुमारजी

## चापासेनी-जामनगर-नडियाद

मा. व. ३ गो. विट्ठलनाथजी

ज्ये. सु. ५ गो. हरिरायजी

फा. व. १४ गो. व्रजरत्नजी

पौष सु. ६ गो. नवनीतरायजी

आष. सु. गो. बालकृष्णजी

गो. चि. विट्ठलेशरायजी के लालजी ३

आषा. सु. १५ चि. मुकुट बावा

फा. व. १२ चि. शरदकुमारजी

फा. सु. १५ चि. उत्सवजी

चि. हरिरायजी के लालजी १
का. व. १२ चि. व्रजवल्लभजी

गो. व्रजरत्नजी के लालजी १
अश्वि. सु. ७ चि. गोकुलोत्सवजी

गो. नवनीतलालजी के लालजी १
ज्ये. सु. १० चि. अंजनरायजी

बालकृष्णजी के लालजी १
पौ. सु. १ चि. प्रियांकजी

## मथुरा

पौ. व. ६ गो. प्राणवल्लभजी

गो.प्राणवल्लभलालजी के लालजी २
का. शुक्ल ११ चि. व्रजवल्लभजी
चै. वदी ११ चि. जयवल्लभ जी
चि. व्रजवल्लभजी के लालजी १
वै. कृ. ११ चि. कृतार्थ बावा
भा. सुदी ५ गो. रसिकवल्लभजी
गो. रसिकवल्लभ जी के लालजी २
मृग शुक्ल ५ चि. समर्पण बावा
आ. सु. ६ चि. प्रागट्य कुमार जी
का. सु. ६ गो. अक्षयकुमारजी
आषा. सु. १४ गो. शरदकुमारजी
गो. शरदकुमारजी के लालजी ३
माघ. व ६ चि. गोपाललालजी
का.सु. ५ चि. व्रजभूषणलालजी
ज्ये. सु. ११ गो. प्रबोधकुमारजी
गो. प्रबोधकुमारजी के लालजी १
भा. सु. ४ चि. रत्नेशकुमारजी
चि. प्रबोधकुमारजी के लालजी १
भा. सु. ८ चि. अभिषेक बावा
मार्ग. व. २ गो. संदीपकुमारजी
पौ. सु. ६ गो. संजयकुमार जी
गो. अक्षयकुमारजी के लालजी ३
आसो. सु. १ चि. प्रणयकुमारजी
प्रणयकुमारजी के लालजी २
फा.शु. १२ गो.चि. श्रीअलंकारजी
फा.शु. ७ गो.चि. वृजरायजी
पौ. व. ६ चि. परितोषकुमारजी
मार्ग. व. ८ चि. पंकजकुमारजी

## वाराणसी

मार्ग. सु. २ श्याम मनोहरजी
गो. श्याममनोहरजी के लालजी १
मार्ग. कृ. ६ गो. चि. प्रियेन्दु बावा

## अहमदाबाद

का.सु. १२ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी
गो. व्रजेन्द्रकुमारजी के लालजी २
आसो. व. १० चि. मधुसूदनलालजी (तिलक बावा)
आश्वि. शु. १ गो.चि. रणछोड़लालजी

(आभरण बावा)

गो.चि. मधुसूदनलालजी
(तिलक बावा) के लालजी २

ज्ये.सु. २ गो. चि. व्रजरायजी
(निवेदन बावा)

आ.व.१० गो.चि. व्रजेश्वरजी
(आभुषणजी बावा)

## मुम्बई

ज्ये. व. ६ गो. श्याममनोहरजी

आ. सु. ५ गो. मनमथराय जी

गो. गोपीनाथजी के लालजी २
का. व. १३ चि. रमेशचन्द्रजी
माघ. सु. ६ चि. अनिरूद्धलालजी
(श्रीराजकुमारजी)

चि. रमेशचन्द्रजी के लालजी १
माघ. व. ६ गो. रघुनाथजी

गो. रघुनाथजी के लालजी २
भा. सु. ५ चि. गोपीनाथजी दिक्षीत जी
(गो. राहुल जी)

मार्ग. सु. २ चि. नागरमोहनजी
(चि. निवेद जी)

चि. अनिरूद्धजी के लालजी २
माघ. व. ६ चि. यदुनाथजी

फा. सु. १५ चि. गोकुलनाथजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
मार्ग. व. ६ चि. नीरजकुमारजी

चि. नीरजकुमारजी के लालजी १
वै. व. १४ चि. गोविन्दरायजी

गो. कृष्णजीवनजी के लालजी ५
आसो. सु. ७ गो. हरिरायजी

पौ. व. ४ गो. मधूसुदन जी

फा. सु. १३ गो. मुरलीमनोहरजी

आषा. सु. २ गो. कृष्णकान्तजी

चि. कृष्णकान्त जी के लालजी १
श्रा. शु. ११ चि. गिरिधरलालजी

चै.सु. १४ गो. पुरूषोत्तमलालजी
गो. पुरूषोत्तमलालजी के लालजी २

मार्ग. सु. ४ चि. गोकुलनाथजी

आषा. सु. ११ चि. ललितत्रिभंगीजी

चि. ललितत्रिभंगीजी के लालजी १
फा. सु. ८ चि. व्रजवल्लभलालजी

गो. हरिरायजी के लालजी २
मार्ग व ४ चि. हृषीकेशजी

चि. हृषीकेशजी के लालजी २
आसो. सु. १ चि. राजीवलोचनजी

वै.सु. ७ रविरायजी

गो. द्वारकाधीशजी के लालजी २
वै. व. ४ चि. योगेशकुमारजी

चि. योगेशकुमारजी के लालजी १
भा. व. ३० चि. बालकृष्णलालजी (मिथिलेशकुमारजी)

आसो. व. ४ चि. कमलेशकुमारजी
चि. कमलेशकुमारजी के लालजी १

फा. कृ. ६ चि. मुकुन्दरायजी

आसो. सु. १ गो. मनमोहनजी
मनमोहनजी के लालजी १

आ. व. १४ गो. चि. प्रियव्रतरायजी

आषा. ३० गो. हिरण्यगर्भजी
गो. हिरण्यगर्भजी के लाल जी १

आ. कृ. ११ चि. हैयंगवीनजी

गो. मधुदसूदनजी के लालजी २

चै.सु. १० चि. कृष्णचन्द्रजी

पौ. व. ५ चि. वल्लभदीक्षितजी

गो. मुरलीमनोहरजी के लालजी १

आसो. सु. ११ चि. गोपिकालंकारजी

चि. गोपिकालंकारजी के लालजी २

मा.व.१० चि. गो. श्री भक्तवत्सल बावा

फा.व.२ चि. गो. श्री तिलकराय बावा

## कान्दीवली-मुम्बई

ज्ये. सु. २ गो. द्वारकेशलालजी

कार्ति. सु. ७ गो. पुरूषोत्तमजी

गो. पुरूषोत्तमजी के लालजी १

आसो.व. २ गो. श्री विट्ठलराय जी (अनुग्रह कुमार जी)

## मुम्बई विलेपार्ले

आसो. सु. ३ गो. रसिकवल्लभजी

चैत्र सुदि ६ गो. महेन्द्रकुमारजी

गो. रसिकवल्लभजी के लालजी १

आसो. सु. १३ चि. शिशिरकुमारजी
चि. शिशिरकुमारजी के लालजी १

पौ. कृ. ५ चि. मुरलीमनोहरजी

## मुम्बई-वेरावल-पोरबन्दर

माघ. सु. ८ गो. माधवरायजी

मार्ग. सु. ६ गो. चन्द्रगोपालजी
गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १

श्रा. कृ. ६ चि. अनिरूद्धलालजी

आसो. व. १४ गो. शैलेशकुमारजी
श्रीशैलेशकुमारजी के लालजी १

श्रा. सु. ३ चि. लाडिलेशजी

गो. माधवरायजी के लालजी १
आषा. व. ४ चि. मुरलीधरजी

## बोरीवली-जामखंभालिया

पौ. सु. १३ गो. वल्लभलालजी

श्रा. व. १३ गो. राकेशकुमारजी

गो. मुरलीधरजी के लालजी ३
का. व. १३ गो. त्रिभंगीलालजी

चै. व. ११ गो. व्रजप्रियजी

चै. व. १४ गो. यशोदानन्दन जी

गो. यशोदानन्दन जी के लालजी १
माघ व. १० चि. व्रजनाथलालजी
(श्री नुपुर कुमार जी)

गो. वल्लभलालजी के लालजी ३
वै. सु. १३ चि. राजीवलोचनजी

मार्ग. सु. २ चि. गोविन्दरायजी

चि. गोविन्दरायजी के लालजी १
श्रा. सु. २ चि. मधुसूदन जी
(चि. रूचिरबाबा)

ज्ये. सु. १५ चि. गोपिकालंकारजी
चि. गोपिकालंकारजी के लालजी १

फा. सु. २ चि. गो. द्वारकेशलालजी

गो. राजीवलोचनजी के लालजी ३

आषा. व. ५ चि. देवकीनन्दनजी
(भागवतकुमारजी)

चि. देवकीनन्दनजी के लालजी १

चै.व. ११ चि. गो. श्री दीक्षितजी
(चि. वेदांग बावा)

ज्ये. सु. ४ चि. कुंजरायजी
(योगीन्द्रकुमारजी)

श्रा. कृ. ३ चि. गो. गिरिधरजी

गो. त्रिभंगीलालजी के लालजी १
का. सु. ३ चि. यमुनेशकुमारजी

## जूनागढ

श्रा. व. ३ गो. दानीरायजी
गो. दानीरायजी के लालजी ४

श्रा. सु. १२ चि. गोकुलेशजी

का. सु. ५ चि. पुरूषोत्तमजी

आषा. सु. ११ चि. व्रजेन्द्रकुमारजी

चि. व्रजेन्द्रकुमारजी लालजी २

भा.व. १ चि. ब्रजनाथजी
(चि. शशांक बावा)

आश्वि. व. १३ चि. मधुरेशजी
(चि. मृदुल बावा)

का. शु. १५ चि. विशालकुमारजी

## पूना-मद्रास

चै. सु. ४ गो. अजयकुमारजी
गो. अजयकुमारजी के लालजी १

भा. कृ. ६ चि. वागधीशकुमारजी

फा. व. ११ गो. भरतकुमारजी
गो. भरतकुमारजी के लालजी १

वै. व. २ चि. यशोवर्द्धन जी

## मांडवी, गोकुल, जूनागढ़, बम्बई, राजकोट, बड़ोदरा

वै. सु. १४ गो. रणछोड़लालजी (राजकोट)
गो. रणछोड़लालजी के लालजी १

फा. कृ. १३ चि. गोकुलनाथजी

माघ. व. ६ गो. अनिरूद्धलालजी
गो. अनिरूद्धजी के लालजी १

वै. सु. १४ चि. रसिकरायजी (शरदजी)
चि. रसिकरायजी के लालजी १

श्रा. कृ. ७ चि. अचिन्त्य जी

आषा. सु. ८ गो. चिमनलालजी (गोकुल)
गो. चिमनलालजी के लालजी २

आ. कृ. ६ चि. चन्द्रगोपालजी (पंकज बावा)

का. सु. ४ चि. भूषणजी

चि. चन्द्रगोपालजी के लालजी २
का. सु. १२ चि. अन्वयजी

श्रा. सु. ५ चि. प्रत्यय जी

चि. भूषणजी के लालजी २
फा. कृ. ३ चि. अव्ययजी

का. सु. ८ चि. गोपालजी

वै. सु. ६ गो. किशोर चन्द्रजी (जूनागढ)
गो. किशोरचन्द्रजी के लालजी १

का. व. ४ चि. व्रजेन्द्रजी (पीयूष बावा)
चि. व्रजेन्द्रजी के लालजी २

का. कृ. २ चि. ब्रजवल्लभजी

पौ. कृ. ७ चि. पुण्यश्लोकजी

पौ. सु. १२ गो. विठ्ठलनाथजी (मुम्बई)

आश्विन कृ. ७ गो. श्री सांरगजी (बडोदरा)
गो. श्री सारंगजी के लालजी १

फा.सु. १४ चि. घनश्यामलालजी (उत्सव बावा)

## पोरबन्दर

वै. सु. ७ गो. हरिरायजी
हरिरायजी के लालजी १

मा. शु. ११ चि. जयगोपालजी

## मथुरा-पोरबन्दर

मार्ग. व. १० गो. रसिकरायजी

आ. सु. १२ गो. मथुरेशकुमारजी

आसो. व १० गो. कन्हैयालालजी

पौ.कृ.८ श्री श्याम मनोहर जी

गो. रसिकरायजी के लालजी २
वै. व. १० चि. चन्द्रगोपालजी

वै. व. ७ चि. शरदकुमारजी

गो. मथुरेशकुमारजी के लालजी २
माघ. व. १२ चि. वसन्तकुमारजी

का. सु. ६ चि. विशालकुमारजी

चि. वसन्तकुमारजी के लालजी १

भा. व. १२ चि. श्रीकृष्णरायजी

गो. कन्हैयालालजी के लालजी २
फा. कृ. ५ चि. अभिषेककुमारजी

वै. शु. ३ चि. अक्षयकुमारजी

गो. चन्द्रगोपालजी के लालजी १
आषा. सु. ७ चि. मिलनकुमारजी

चि. मिलनकुमारजी के लालजी १
मार्ग शु. ८ चि. गोकुलनाथजी

# लीलास्थ गोस्वामि बालकन के उत्सव की सूचना

वै. सु. ३ श्रीदेवकीनन्दनजी कामवन
वै. व. ११ श्रीदेवकीनन्दनजी इन्दौर
वै. व. १२ श्रीदीक्षितजी बम्बई
वै. व. १४ श्रीविट्ठलेशरायजी पोर.
ज्ये. सु. ६ श्रीगिरधरजी कोटा
जये. सु. १२ श्रीद्वारकेशलालजी कोटा
ज्ये. सु. १५ श्रीजीवनलालजी काशी
ज्ये. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी मांडवी
ज्ये. व. १४ श्रीवागधीशजी अमरेली
आ. सु. ३ श्रीवल्लभलालजी कामवन
भा. सु. ७ श्रीव्रजरत्नलालजी सूरत
फा. शु. १५ श्रीमाधवरायजी पोर.
का. व. ७ श्रीगोविन्दलालजी नाथद्वारा
आ. व. ८ श्रीघनश्यामलालजी कामवन
आ. व. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी बम्बई
वै. व. १ श्रीद्वारकेशजी पोरबन्दर
आ. व. १ श्रीगोकुलेशरायजी जूनागढ़
आ. व. ८ श्रीयदुनाथजी सूरत
आ. व. १० श्रीव्रजरत्नलालजी नडियाद
आ. व. १३ श्रीबालकृष्णजी कांकरोली
आ. व. १३ श्रीकृष्णरायजी इन्दौर

आ. व. १३ श्रीगोकुलेशजी बम्बई
आ. सु. ३ श्रीदामोदरलालजी चापां
भा. वं. १ श्रीगोवर्द्धनलालजी नाथद्वारा
माघ व. २ श्रीव्रजभूषणलालजी कांक
फा. व. ५ श्रीचिम्मनलाल जी बम्बई
मा. व. ३० श्रीगोविन्दरायजी पोर.
मा. कृ. १ श्रीदाऊजी (राजीवजी) नाथद्वारा
श्रा. व. १४ श्रीगोपाललालजी कांकरोली
भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी बेटद्वार
श्रा. व. ८ श्रीकन्हैयालालजी गोकुल
भा. व. १० श्रीव्रजनाथजी विलेपार्ले
का. सु. १४ श्रीजीवनलालजी कोटा
भा. व. ७ श्रीवल्लभलालजी बड़ौदा
भा. व. ८ श्रीमुरलीधरजी कोटा
भ. व. ११ श्रीनृसिंहलाल जी शेरगढ़
आ. सु. १३ श्रीरघुनाथजी जूनागढ़
आ. व. ३ श्रीघनश्यामलालजी बम्बई
आ. व. ५ श्रीव्रजनाथजी जामनगर
आ. व. ६ श्रीमगनलालजी सूरत
आ. व. १३ श्रीव्रजपाललालजी मथुरा
का. व. २ श्रीपुरूषोत्तमलालजी जूना

का. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी अमरे
का. सु. ७ श्रीलालमणिजी कोटा
का. सु. ८ श्रीगोपाललालजी मथुरा
फा. सु. ८ श्रीरमणजी कामवन
आ. सु. ३ श्रीगोपालालजी कांकरोली
का. व. १४ श्रीजयदेवजी वीरमगाम
मार्ग सु. १३ श्रीगिरधरलालजी नाथ
ज्ये. सु. ५ श्रीजीवनजी बम्बई
ज्ये. सु. ११ श्रीकल्याणरायजी मथुरा
ज्ये. सु. १३ श्रीजीवनलालजी पोर
ज्ये. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी बम्बई
श्रा. व. ७ श्रीरणछोड़लालजी बम्बई
पौ. सु. ५ श्रीगोपेश्वरलालजी नाथद्वारा
पौ. सु. ६ श्रीदामोदरलालजी नाथद्वारा
पौ. सु. ७ श्रीरणछोड़लालजी कोटा
पौ. व. ११ श्रीरणछोड़लालार्जी राज
पौ. व. ६ श्रीवल्लभलालजी बम्बई
का. सु. ४ श्रीमधुसूदनलालजी अमरे
का. सु. १० श्रीगोकुलाधीशजी बम्बई
का. सु. १५ श्रीगिरधरलालजी काशी
श्रा. व. १२ श्रीप्रद्युम्नलालजी वेटद्वार
फा. सु. ३ श्रीगिरधरजी सूरत
फा. सु. ११ श्रीगोविन्दरायजी सूरत

फा. व. १३ श्रीव्रजरायजी अहमदाबाद
श्रा. व. ६ श्रीकृष्णजीवनजी
माघ. व. २ श्री नटवरलालजी
का. सु. १ श्रीरमणलालजी मथुरा
श्रा. सु. १२ श्रीविट्ठलेशरायजी चापा
श्रा. सु. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई
भा. सु. १२ श्रीगोकुलनाथजी बम्बई
भा. सु. १२ श्रीअनिरूद्धलालजी नडियाद
भा. व. ३ श्रीगोवर्द्धनलालजी बम्बई
भा. व. ३ श्रीदामोदरलालजी मथुरा
भा. व. ७ श्रीघनश्यामलालजी सूरत
वै. कृ. ५ श्रीरणछोड़लालजी कोटा
ज्ये. व. १२ श्रीब्रजरमणलालजी मथुरा
भा. कृ. १२ श्रीगोविन्दरायजी कोटा
का. सु. १३ श्रीगोविन्दरायजी कामवन
पौ. व. १२ श्रीव्रजभूषणलालजी नड़ि
आसो व. १० श्री व्रजरायजी
(नटवरगोपालजी) अहमदाबाद
श्रा. सु. ११ श्रीगिरधारीलालजी मु.
चै. सु. १५ श्रीमुरलीधरलालजी बोरी.
वै. सु. ११ श्रीयदुनाथरायजी जती.
वै. व. ३० श्रीवागीशरणजी बम्बई
आषा. सु. २ श्रीगोपाललालजी कामवन

आषा. सु. २ श्रीमगनलालजी वेरावल
श्रा. सु. २ श्रीवल्लभलालजी बम्बई
श्रा. व. ३० श्रीकन्हैयालालजी बम्बई
भा. सु. ४ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा
का. सु. १ श्रीगोवर्द्धनेशजी बम्बई
का. सु. ३ श्रीप्रदीपकुमारजी मथुरा
का. सु. ११ श्रीश्यामसुन्दरजी बम्बई
भा. सु. १० श्रीदामोदरलालजी बम्बई
भा. सु. ११ श्रीव्रजवल्लभजी जूना
भा. सु. १३ श्रीपुरूषोत्तमलालजी को.
पौ. सु. ४ श्रीगोकुलनाथजी वेरावल
फा. सु. १२ श्रीकाकागिरधरजी नाथ.
भा. सु. ६ श्रीपुरूषोत्तमलालजी चापा
पौ. सु. १० श्रीकल्याणरायजी बम्बई
चै. सु. १३ श्रीमुरलीधरजी काशी
ज्ये. सु. ४ श्रीत्रिविक्रमरायजी कोटा
आषा. सु. ३ श्रीमथुरेशजी मुम्बई
वै. सु. १५ श्रीमाधवरायजी मुम्बई
भा. व. १ श्रीमदनमोहनजी मुम्बई
आषा. व. ३ श्रीनटवरगोपालजी (मु.-वेरावल - पोरबन्दर)
ज्ये. व. ४ श्रीगिरधरलालजी कामवन
फा. सु. १४ श्रीमधुसुदनलालजी सूरत

आष.व. ११ श्रीबालकृष्णलालजी सूरत
पौ.व. ६ श्रीविट्ठलनाथजी मथुरा
फा. व. ३० श्रीकृष्णचन्द्रजी मुम्बई
का. सु. ७ श्रीजीवनेशजी मुम्बई
वै. व. १४ श्रीव्रजाधीशजी मुम्बई
आ. सु. ५ श्रीविट्ठलेशरायजी कां. मुम्बई
का. व. ८ श्रीराजेन्द्रकुमारजी मथुरा
आषा. व. ११ श्रीविट्ठलेशरायजी इन्दौर
आसौ. सु. ११ श्रीकृष्णकुमारजी कामवन
माघ सु. ४ श्रीकृष्णकुमारजी मथुरा
माघ वदी ४ श्रीनृत्यगोपालजी मुम्बई
मार्ग. सु. १४ श्रीद्वारकेशलालजी मांडवी
माघ. कृ. २ श्रीनटवरलालजी मांडवी
वै. सु. १० श्रीमुरलीमनोहरजी बडोदरा
आ. सु. ५ श्रीदामोदरलालजी राजकोट
ज्ये. सु. ८ श्रीमुकुन्दरायजी राजकोट
वै. सु. ६ श्रीयदुनाथजी मथुरा
का.व. १० उत्तमश्लोकजी मुम्बई
फा.सु. ४ गोकुलनाथजी गोकुल
आषाढ़ व. ८ रसिकरायजी चापासेनी -जामनगर-नडियाद
भा. सु. ८ गो. व्रजजीवनजी - कान्दीवली - मुम्बई
आ.शु. १४ गो. देवेन्द्रकुमारजी, नाथद्वारा